International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 06, June 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

जयपुर प्रांत की लोकनाट्य शैली रामलीला का समसामयिक अध्ययन

हेमन्त कुमार
शोधार्थी
संगीत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

रामलीला के अन्तर्गत मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के चरित्र का वर्णन मिलता है। इनके चरित्र को नाट्य रूप में प्रदर्शित करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। यही परम्परा कथानक एवं साहित्यिक मेल से प्रदर्शित करना रामलीला है।

सुप्रसिद्ध कलाकार एवं रामलीला शैली के पुरोधा पं. हनुमान सहाय शर्मा के अनुसार ''रामलीला शैली का प्रादुर्भाव अयोध्या से ही है, बाद में यह शैली देश के अन्य प्रांतों में प्रचार में आई थी।''

भगवान श्री राम का जन्म अयोध्यानगरी से माना जाता है। इनके चरित्र को लेकर सर्वप्रथम महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' ग्रंथ की रचना की। इनके पश्चात् गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' नामक

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

महाकाव्य की रचना की। तदुपरांत इस परम्परा को काफी प्रचार–प्रसार मिला। इस संदर्भ में श्री कैलाश स्नेही का कहना है कि ''प्राचीनकाल से यह रामलीला शैली चली आ रही है, यह परम्परा अवध के संतों के माध्यम से आई। समाज में संस्कार एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए इसका प्रचलन हुआ।''

वैसे यह परम्परा मूल रूप से अयोध्या प्रांत में लगभग चार–पाँच हजार साल पुरानी मानी जाती है। कहा जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम त्रेता युग में अवतरित हुए थे। इन्होंने माता–पिता की आज्ञा का पालन कर आदर्श स्थापित किया। अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की सदा विजय होती आई है। पं. दुर्गाशंकर शर्मा का कहना है कि ''आदर्श एवं नैतिकता के लिए रामलीला का मंचन किया जाता है।''

प्राचीनकाल में मनोरंजन के साधन नहीं होने के कारण विभिन्न प्रकार के किस्से एवं कहानियाँ पात्रों द्वारा दर्शाकर लोगों का मनोरंजन कराया जाता था। इनके दो मुख्य उद्देश्य होते थे प्रथम – जनता का मनोरंजन, दूसरा – उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना।

यह रामलीला परम्परा मूल रूप से संस्कृत भाषा में ही होती थी तत्पश्चात् यह अवधी भाषा में होने लगी। पं. श्री कृष्ण शर्मा का कहना है कि ''अनुशासन, चरित्र निर्माण एवं संस्कृत भाषा का ज्ञान भी रामलीला से ही मिलता है।'' इसका मुख्य

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

केन्द्र अवध क्षेत्र रहा। कालान्तर में यह परम्परा इस क्षेत्र के साथ–साथ अन्य प्रांतों में भी बहुत लोकप्रिय हुई। इसलिए इस परम्परा में कुछ मूलभूत बदलाव हुए। जनसाधारण तक इस लोकनाट्य शैली रामलीला को पहुँचाने के लिए इसकी भाषा एवं पात्र संवादों में आँचलिक बोलियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। इस शैली के वस्त्र विन्यास एवं श्रँगार में स्थानीय महिला पुरूष परिधानों के साथ–साथ स्थानीय वस्तुओं का प्रयोग होने लगा। श्री कैलाश स्नेही के अनुसार ''उस समय के रंगमंच साधारण से होते थे। वेशभूषा एवं श्रृंगार की सामग्री भी सामान्य ही प्रयोग होती थी। इस शैली का प्रचार–प्रसार उत्तर प्रदेश में अधिक होने के कारण इससे सम्बन्धित सामग्री भी वहीं पर अधिक मिलती है।''

प्राचीनकाल में यह परम्परा काफी सुदृढ़ रही, इसका मुख्य कारण मनोरंजर के साधनों का नहीं होना एवं उस समय के शासकों द्वारा संरक्षण देना सहायक रहा। शासकों का मुख्य उद्देश्य अपनी प्रजा को खुश एवं शांत रखना रहा। पं. विष्णुदत्त शर्मा के अनुसार ''रामलीला में मुख्य प्रसंग रामचरित मानस से लिए जाते हैं। इसके साथ–साथ 'बाल्मीकि रामायण' और 'राधेश्याम रामायण' के प्रसंगों को भी मिश्रित कर अधिक आकर्षक बनाया जाता है।'' कालान्तर में मुगलों एवं अंग्रेजो के आगमन के कारण इस

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

रामलीला परम्परा को काफी आपात पहुँचा। मुगल काल में भक्ति आंदोलन के दौरान गोस्वामी तुलसीदास के अथक प्रयासों से यह परम्परा पुनजीवित हुई। और श्री राम जी की महिमा जन–जन तक पहुंची। आगे चलकर यह लोक नाट्य शैली रामलीला समसामयिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारण अपने व्यवसायिक स्वरूप में प्रचलन में आई। पं. हरिशंकर शर्मा के अनुसार ''जयपुर प्रांत में हमारे बाबा श्री नाथूलाल जी को लोक नाट्य शैली रामलीला प्रारम्भ करने का श्रेय है।''

18वीं शताब्दी में जयपुर नरेश महाराज जयसिंह द्वारा जयपुर की स्थापना के पश्चात् जयपुर शश्हर में रामलीला मंचों का निर्माण हुआं पण्डित श्री हनुमान सहाय शर्मा 'महाराज' के पूर्वजों को इस रामलीला परम्परा को जयपुर प्रांत में स्थापित करने का श्रेय है। इनमें श्री नाथूलाल जी, श्री रामप्रताप जी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, पं. सूरजमल शर्मा, पं. भौंरीलाल शर्मा, पं. रामधन एवं पं. मम्खनलाल आदि उल्लेखनीय हैं।

पं. हनुमान सहाय शर्मा 'महाराज' ने इस लोक नाट्य शैली में स्थानीय तालों एवं रागों के साथ कुछ मूलभूत बदलाव कर इस लोक नाट्य शैली रामलीला को नूतन स्वरूप प्रदान कर बदलती परस्थितियों, परिवेश एवं तकनीकी इत्यादि पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए

अपनी नवीन विशिष्ट शैली का सृजन किया।

लोक नाट्य शैली रामलीला के मंचन में रंगमंचीय स्वरूप महत्वपूर्ण तत्व है किंतु पं. हनुमान सहाय शर्मा (महाराज) की रामलीला के मंचन में किसी विशेष रंगमंचीय व्यवस्था का उल्लेख नहीं है। गांव में किसी ऊँचे स्थान पर कपड़ा या दरी बिछाकर उस पर रामलीला का मंचन किया जाता था सामने की ओर दर्शक खुले में जमीन पर ही बैठकर रामलीला देखते थे। कुछ समय पश्चात् 4 बाँस या लकड़ी जमीन में लगाकर उस पर पर्दे या कपड़े लगाकर मंच बनाया जाता। तदुपरान्त मंच के लिए चित्रित पर्दों का प्रयोग किया जाने लगा। इसमें दृश्य के अनुसार कपड़े पर चित्रण किया जाता जैसे राजमहल, जंगल, नदी आदि। आधुनिक स्थायी मंचों में फिलर, विंग्स एवं बेक स्टेज का प्रयोग किया जाने लगा है।

प्राचीन समय में तेल के दीपक एवं चिरागों का प्रयोग प्रकाश के लिए किया जाता था। इसके बाद केरोसीन, लालटेन एवं गैस के हण्डो का प्रयोग किया जाने लगा। विद्युत व्यवस्था प्रारम्भ होने पर बल्ब, हेलोजीन, मर्करी, स्पॉट लाइट्स, फुटलाइटस एवं कलरफुल लाइट्स का प्रयोग किय जाने लगा है। रंगमंच पर स्थायी प्रकाश व्यवस्था का वर्तमान में प्रयोग किया जाने लगा है।

प्राचीन समय में रामलीला मंचन में पात्र साधारण वेशभूषा, धोती, कुर्त्ता, अचकन एवं पगड़ी ओर महिला पात्र घाघरा, चोली एवं ओढनी इत्यादि वस्त्रों का उपभोग करते थे। रामलीला मंचन में पात्र पूरे समय एक ही वेशभूषा पहने रहते थे। समय–परिवर्तन एवं सुविधाएँ बढ़ने के साथ साथ वेशभूषा में विशेष चमकदार, राजसी तपस्वी, राक्षस एवं ऋषिन्मुनि इत्यादि पात्रों के अनुसार ही विशेष वेशभूषा का उपयोग किया जाता है।

प्राचीन समय में श्रृंगार में मुर्दासिंगी गोपीचन्दन, पीला कच्चा रंग, कोयला, बाँस की सीके आदि सामग्री का प्रयोग करते थे। आधुनिक श्रृंगार सामग्री में फाउण्डेशन, जिंक ऑक्साइड, आइब्रो, लाईनर, विंग्स, दाढी एवं लिपिस्टिक इत्यादि प्रसाधनों का प्रयोग किया जाता है।

पहले रामलीला मंचन में पात्रों के संवाद संस्कृत, ब्रज एवं अवधी से प्रभावित थे। फारसी रंगमंच और राधेश्याम रामायण के आने के बाद पात्रों के संवादों में उर्दू, अरबी एवं फारसी का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

रामलीला मंचन के प्रस्तुतीकरण का स्तर दर्शकों के स्तर के अनुसार होता था किंतु वर्तमान समय में आधुनिक तकनीक के उपयोग से प्रस्तुतीकरण उच्च स्तरीय हो गया है। पंत्र हनुमान सहाय शर्मा जी की रामलीला परम्परा में इनके द्वारा रचित विशिष्ट संगीत रचनाओं

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

का प्रसंगों के अनुकूल विविध रागों यथा देस, चन्द्रकोंस, मालकौंस, कल्याण, केदार एवं बिहाग इत्याादि में रागबद्ध होती है। ये संगीत रचनाएँ ताल कहरवा, दादरा, रूपक, त्रिताल आदि तालों में तालबद्ध होती है। रामलीला मंचन में रोचकता एवं मनोरंजन की दृष्टि से प्रसंगों के बीच में नृत्य एवं गायन का कार्यक्रम भी रखा जाता है। पं. महेशकुमार शर्मा के अनुसार ''पं. जी ने अनेक लोगों को रामलीला के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित किया। इनका भाषा और संगीत पर अच्छा नियन्त्रण था। इनके जैसा गुरू एवं प्रशिक्षक मैंने कहीं नहीं देखा।''

पं. हनुमान सहाय शर्मा 'महाराज' ने इस लुप्त प्राय लोकनाट्यशैली रामलीला में स्थानीय तत्वों के मेल और अपने अथक प्रयासों से इस लोक नाट्य शैली रामलीला को पुनजीर्वित कर एक आदर्श कायम किया। श्री प्रकाश पारीक के शब्दों में 'पं. जी, उच्च व्यक्तित्व के धनी थे। इनके जैसा मैंने अपने जीवन में कोई और नहीं देखा, मेरे विचार से सम्पूर्ण रामलीला पं. जी में समाई हुई है।'' वर्तमान समय की भाग दौड़ और चकाचौंध में दूरदर्शन के आ जाने से बहुत बदलाव आया है। अब लोग लोक नाट्य शैलियों को देखना पसंद नहीं करते, वे टी.वी. के सामने बैठकर समय व्यर्थ करते हैं।

दूरदर्शन पर मारधाड़, वाले सीरियल या फिल्मों में अश्लीलता

दिखाई जाती है। न्यूज चैनलों पर पाएँगे कि आरोप–प्रत्यारोप, बलात्कार लूट खसोट या हत्यावाली खबरें बहुतायत में दिखाई जाती है। इन सबकी वजह से मानव समाज का नैतिक पतन हुआ है। श्री कैलाश स्नेही का कहना है कि ''दूरदर्शन एवं रेडियो आदि के द्वारा इस रामलीला शैली को क्षति पहुँची है।'' बढ़ती हुई असहिष्णुता और एकल परिवारों के बढ़ते चलन से भी समाज का पतन हुआ है। इन सबका मुख्य कारण रामलीला शैली के प्रति उदासीनता है।

इन परिस्थितियों में सरकार को चाहिए कि वह रामलीला–कलाकारों को उचित संरक्षण प्रदान करें। वर्तमान में लोक नाट्य शैली रामलीला में क्या सुधार होना चाहिए? एवं सरकारी, आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर सुधार के लिए एक आयोग बनाया जाए। जो कि इन कलाओं एवं कलाकारों के कल्याण हेतु कार्य करे तथा इन्हें उचित धनराशि मुहैया कराये। रामलीला शैली के उभरते कलाकारों के उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करें तथा पुराने अनुभवी कलाकारों की सहायता प्राप्त कर उन्हें समुचित सम्मान प्रदान करें। पं. विजयरामदास शाकंभर का कहना है कि ''इस शैली को सरकार द्वारा संरक्षण मिलना चाहिए। जब तक बाबूजी (पं. हनुमान सहाय शर्मा) जैसे लोग हैं तब तक यह शैली विलुप्त नहीं हो सकती।''

पतन की ओर अग्रसर इस मानव–जीवन में शांति एवं समृद्धि के साथ–साथ उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना में यह लोक नाट्य शैली रामलीला बहुत कारगर सिद्ध हो सकती है। धूमिल होते मानवीय रिश्तों एवं बढ़ते हुए अपराधों को रोकने में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का चरित्र समाज को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

सन्दर्भ सूची

1. पं. हनुमान सहाय शर्मा (महाराज) साक्षात्कार स्थान– मोहनपुरा दिनांक 01.05.2016
2. श्री कैलाश स्नेही साक्षात्कार स्थान– चाकसू, दिनांक 14.04.2017
3. पं. दुर्गाशंकर शार्मा साक्षात्कार स्थान– पहाड़िया दिनांक 14.04.2017
4. पं. श्री कृष्ण शर्मा साक्षात्कार स्थान– सांगानेर, जयपुर दिनांक 05.08. 2017
5. श्री कैलाश स्नेही, साक्षात्कार स्थान– चाकसू, दिनांक 14.04.2017
6. पं. विष्णु दत्त शर्मा, साक्षात्कार स्थान– बीलवा, दिनांक 19.03.2017
7. पं. हरिशंकर शर्मा साक्षात्कार स्थान सांगानेर जयपुर, दिनाक 05.03.2017
8. पं. महेश कुमार शर्मा साक्षात्कार स्थान– पहाड़िया, दिनांक 14.04.2017
9. श्री प्रकाश पारीक साक्षात्कार स्थान, वाटिका, दिनांक 14.04.2017
10. श्री कैलाश स्नेही साक्षात्कार स्थान–चाकसू, दिनांक 14.04.2017
11. पं. विजय रामदास शाकंभर साक्षात्कार स्थान– अयोध्या, दिनांक 26.6. 2018
12. राधेश्याम–रामायण – पं. राधेश्याम शर्मा
13. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास
14. वाल्मिकी रामायण – वाल्मीकि कृत
15. लोक कला – निबंधावली, भाग–2, देवी लाल सांभर, प्रकाशक भारतीय लोक कला मण्डल, 1966
16. लोक कला मंजरी – देवी लाल सांभर, प्रकाशक बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलानी, राजस्थान।
17. पारसी थियेटर उद्भव और विकास – सोमनाथ गुप्त, प्रयाग की रामलीला, योगेन्द्र तापराह, प्रकाशक लोक भारतीय, इलाहबाद, 2011.
18. लोकनाट्य में संगीत – डॉ. ज्ञानवती वेद मेहता, प्रकाशक लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहबाद, 1984 सं.
19. लोक नाट्य परम्परा और प्रयोग – डॉ. सेन राम देशमुख, प्रकाशक वाणी बुक सेंटर, दिल्ली।

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)